

(शिवसिंह सरोज, 868 वा छंद)। 19. युक्ति, उपाय 20. नट या बाजीगर द्वारा दिखाए जाने वाले अनोखे करतब, कौतुक, लीला, खेल उदा. कोटिक कला काछि दिखराई -सूरसागर 1/153) (छंद) चार वर्णों का एक समवर्णिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः भगण और गुरु के योग से कुल चार वर्ण होते हैं। शैव द. ईश्वर की संकुचित कर्तव्य शक्ति जो सृष्टि-विकास का एक तत्व है और जीव को आवृत करने वाले षट्कंचुकों में से एक है चिकि. कुछ अंगों के तल और शरीर की गुहाओं की अंतःस्थ परत के ढकने वाला एक पतला और लचीला ऊतक झिल्ली (अ. मेम्ब्रेन) प्रयो. कला-करना अपने करतब दिखाना (नट, नटी आदि द्वारा)।

कलाई स्त्री. (तत्.) हाथ के पहुँचे का वह भाग जहाँ हथेली का जोड़ होता है, मणिबंध, गट्टा, पहुँचा 2. स्त्री. सूत का लच्छा।

कलाकंद पुं. (फा.) बरफी, मावा (खोए) और स्वच्छ खांड के संयोग (मेल) से जमाकर बनाई गई मिठाई।

कला-कलित वि. (तत्.) 1. कला से पूर्ण, कलाकारीयुक्त, कलात्मक 2. चौंसठ कलाओं की जानकारी से युक्त।

कलाकार पुं. (तत्.) 1. कला विशेष का जानी या जानकार व्यक्ति 2. कला विशेष के माध्यम से आजीविका चलाने वाला व्यक्ति 3. कलावंत 4. अभिनेता, चित्रकार आदि।

कलाकारिता स्त्री. (तत्.) कलाकार व्यक्ति का व्यवसाय, काम, धंधा। 2. कलाकार का हुनर, कौशल।

कलाकारी स्त्री. (तत्.) 1. कलाकार का हुनर, कौशल 2. कला, काम, धंधा, कलाकारिता।

कला-कार्य पुं. (तत्.) 1. कला या हुनर का कार्य 2. कलात्मक कार्य, कलाकारी, किसी वस्तु के आवरण, शीर्ष तथा प्रस्तुति में प्रदर्शित कलात्मकता, चित्रांकन।

कला-कुशल वि. (तत्.) कला में कुशल, कला में निपुण।

कलाकृति स्त्री. (तत्.) कलायुक्त रचना, कलापूर्ण कृति, ऐसी रचना जो कलापूर्ण हो।

कलाकोण पुं. (तत्.) खगो. (अ.) फेज ऐंगल, किसी क्षण पर किसी ग्रह और पृथ्वी को जोड़ने वाली रेखा और उस ग्रह को सूर्य से जोड़ने वाली काल्पनिक रेखा के बीच का काल्पनिक कोण।

कला-कौशल पुं. (तत्.) 1. कला का कौशल, कला में निपुणता, कला और शिल्प।

कला-क्षय पुं. (तत्.) 1. धीरे-धीरे क्रमशः होने वाला क्षय या हानि 2. कृष्ण-पक्ष में चंद्रमा की कलाओं की क्रमशः होने वाली हानि या क्षण, चंद्र का हास।

कला-तत्त्व पुं. (तत्.) कला के आधार पर जो किसी कला-कृति के अंग होते हैं जैसे- बिंदु रेखा, रंग, लय, तकनीक आदि कला तत्वों का महत्व, कला का तत्व। art element

कलातीत वि. (तत्.) कला से अतीत अर्थात् जो सभी कलाओं से परे हो।

कलात्मक वि. (तत्.) जिसमें कला का सुंदर प्रदर्शन हुआ हो, कलापूर्ण, कलामय।

कलादा पुं. (देश.) महावत के बैठने का हाथी की गर्दन वाला भाग।

कलाधर पुं. (तत्.) 1. जो कलाओं से युक्त हो या कलाओं को धारण करता हो 2. कला का जानकार ज्ञाता, कलाकार 3. चंद्रमा, शिव, (छंद) दंडक छंद का वह भेद जिसमें गुरु और लघु के क्रम से 15 गुरु तथा 15 लघु वर्णों के बाद अंत में एक गुरु वर्ण होता है।

कलाना स.क्रि. (देश.) पकाना, तलना, भूनना।

कलानाथ पुं. (तत्.) 1. कला का स्वामी 2. कलाकार 3. चंद्रमा।

कलानिधि पुं. (तत्.) 1. कलाएँ ही हैं निधि जिसकी 2 कलाओं का मंजर। 3. कलाओं में पारंगत 4.